Samrat Vikramadittya

Vikramadittya is considered as a legendary emperor of ancient India who established the “Vikram Samvat” or the Vikram Calendar in 57 B.C. The name Vikramadittya means the “Sun of Valor” the one who is as powerful as Sun. As per the popular traditions, Vikramadittya is stated to have ruled Ujjaini for a long period. Vikram Samvat was also being known as 'Krat' and 'Malav'. Vikram Samvat along with Saka Samvat is used in India along with the Gregorian Calendar. It is also used in Nepal as the official calendar. In the Hindi version of the Preamble of Constitution of India, the date of adoption of the Constitution, 26 November 1949, is presented in Vikram Samvat. It is a lunar calendar and uses lunar months and sidereal years for timekeeping.

According to the Kathasaritsagara, Vikramadittya was the son of Ujjain's King Mahendraditya of the Paramara dynasty. The subject matter of Kathasaritsagara is based upon the matter of Brihatkathamanjari that was originally based on the non-available 'Vadd Kaha' by Gunnaddhya. Brihatkathamanjari and Soma Deva's Kathasaritsagara both contain multiple legends about Vikramadittya.

Besides the old book 'Jyotividabharan', references of the king Vikramadittya are found in the books 'Singhasan Batteesy' and 'Bettal Pacheesy' also. In these books Vikramadittya is referred as the most popular ruler and the hero in all these interesting stories.

Many historians believe that Vikramadittya might be the title adopted by a later king who renamed the era after himself. However as per the recorded history, Chandragupta (II) of the Gupta Dynasty attained the title of Vikramadittya after defeating the Shakas and for this very reason he also got the title 'Shakari' (Enemy of the Shakas). Apart from Chandragupta (II), the names of king Bhoj of Dhara city and the king of Gujrat Siddhraj Jai Singh are also associated with the legendary title. The ruler of Delhi, Hem Chandra who faced the Mughal forces in the second battle of Panipat also carried the title “Vikramadittya”. Though there seems to be a number of historical or legendary characters of the name of Vikramadittya, the Vikram Samvat that was started in 57 B.C. is certainly an invaluable legacy and a symbol of the astronomical and horological heritage of our country.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Samrat Vikramadittya, who started the Vikram Samvat.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent

Stamp/FDC/Brochure: Sh.Brahm Prakash

Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

सम्राट विक्रमादित्य
Samrat Vikramadittya

विवरणिका
BROCHURE

सम्राट विक्रमादित्य

विक्रमादित्य प्राचीन भारत के एक प्रसिद्ध सम्राट माने जाते हैं जिन्होंने 57 ईसा पूर्व में "विक्रम संवत्" अथवा विक्रम कैलेंडर की स्थापना की। विक्रमादित्य नाम का अर्थ है "पराक्रम का सूर्य" एक ऐसा नाम जो सूर्य के समान शक्तिशाली है। लोकप्रिय परम्पराओं के अनुसार कहा जाता है कि विक्रमादित्य ने लंबे समय तक उज्जयिनी में शासन किया। विक्रम संवत् को 'कृत' और 'मालव' के रूप में भी जाना जाता था। भारत में ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ शक संवत् और विक्रम संवत् का प्रयोग भी किया जाता है। नेपाल में भी सरकारी कैलेंडर के रूप में विक्रम संवत् का प्रयोग किया जाता है। भारत के संविधान की प्रस्तावना के हिन्दी रूपान्तरण में, संविधान को अपनाने की तारीख 26 नवम्बर, 1949 विक्रम संवत् में ही है। यह एक चन्द्र कैलेंडर है और इसमें समय के लिए चान्द्र मास और नाक्षत्र वर्ष का प्रयोग किया जाता है।

कथा सरित्सागर के अनुसार, विक्रमादित्य उज्जैन के परमार वंश के राजा महेन्द्रादित्य के पुत्र थे। कथा सरित्सागर की विषय वस्तु बृहत्कथामंजरी के विषय पर आधारित है जो मूलत: गुणाड्डय द्वारा 'वड्ड कहा' (अप्राप्य) पर आधारित थी। बृहत्कथामंजरी और सोमदेव के कथा सरित्सागर दोनों में विक्रमादित्य के बारे में बहुत सी दन्तकथाएं हैं।

प्राचीन पुस्तक 'ज्योतिर्विदाभरण' के अतिरिक्त, राजा विक्रमादित्य का उल्लेख 'सिंहासन बत्तीसी' और 'बेताल पचीसी' पुस्तकों में भी पाया जाता है। इन पुस्तकों की सभी रुचिकर कहानियों में विक्रमादित्य का उल्लेख एक अत्यधिक लोकप्रिय शासक और उनके नायक के रूप में किया गया है।

बहुत से इतिहासकारों का यह विश्वास है कि 'विक्रमादित्य' शायद किसी बाद के राजा द्वारा धारण की गई उपाधि है जिसने युग का नामकरण अपने नाम से कर दिया। तथापि, अभिलेखित इतिहास के अनुसार, गुप्त वंश के चन्द्रगुप्त (II) ने शकों को परास्त करने के बाद विक्रमादित्य उपाधि प्राप्त की और इसी कारण से उन्हें 'शकारि' (शकों का शत्रु) की उपाधि भी प्राप्त हुई। चन्द्रगुप्त (II) के अतिरिक्त, 'धारा' नगरी के राजा भोज और गुजरात के राजा सिद्धराज जयसिंह के नाम भी इस प्रसिद्ध उपाधि से जोड़े जाते हैं। दिल्ली के शासक, हेमचन्द्र, जिन्होंने पानीपत की दूसरी लड़ाई में मुगल सेना का सामना किया, ने भी 'विक्रमादित्य' उपाधि धारण की थी। हालांकि, विक्रमादित्य के नाम के कई ऐतिहासिक अथवा प्रसिद्ध पात्र देखने में आते हैं, लेकिन विक्रम संवत् जो 57 ई.पू. में शुरू किया गया, निश्चित रूप से एक अमूल्य धरोहर है और हमारे देश की खगोलीय और नियतकालिक विरासत का प्रतीक है।

डाक विभाग, सम्राट विक्रमादित्य, जिन्होंने विक्रम संवत् शुरू किया, पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण : श्री ब्रह्म प्रकाश

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	402890 402890
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00